बहुभाषाविद् साहित्यकार पर साहित्य अकादमी ऑन लाइन वेबनार का आयोजन

कोलकाता, 16 जून (नि.प्र.)। साहित्य अकादमी द्वारा बीसवीं शदी के आरंभिक काल में मैथिली साहित्य को सभी विधाओं में शीर्ष पर ले जाने वाले विद्वान बहुभाषाविद् साहित्यकार जनार्दन झा जनसीदन पर साहित्य अकेदमी ऑन लाइन वेबनार का आयोजन किया, जिसमें अकादमी के उपसचिव एन सुरेश बाबू (नई दिल्ली) ने विद्वानों का स्वागत और परिचय करवाए, अकादमी में मैथिली साहित्य के संयोजक विद्वान डॉ. प्रो. श्री अशोक कुमार झा अविचल (टाटा) द्वारा विषय प्रवर्तन करते हुए जनसीदन जी को अपने समय के अव्वल दर्जे के बहु भाषा साहित्यकार सामाजिक चिंतक कहते हुए सारगर्भित अभिभाषण से जुड़े हुए श्रोताओं को अभिभूत कर गये। पश्चात बीज भाषण देते हुए डॉ. प्रो श्री दमन कुमार झा (दरभंगा) ने जनसीदनजी को मैथिली साहित्य का मार्ग दर्शक कहा है। प्रथम सत्र के अध्यक्षता मैथिली भाषा साहित्य के उद्भट विद्वान पटना वि.वि. से अवकाशप्राप्त डॉ. प्रो. श्री इन्द्रकॉत झा ने जनसीदन जी तुलनात्मकता अध्ययन में डॉ. रवीन्द्र नाथ टैगोर के प्रवल समर्थक और बंगला-मैथिली साहित्य का महान अनुवादक कहकर मैथिली ही नहीं साहित्य का दर्शनकार कहा है। आलेख बाचन के द्वितीय सत्र में क्रमिक तीन आलेख वाचक डॉ. विद्वान प्रो. श्री नरेंन्द्र नाथ झा जनसीदन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला तो श्री आमोद कुमार झा (कोलकाता) मैथिली के प्रारंभिक उपन्यास और जनसीदन पर आलेख पढ़े और सुश्री निक्की प्रियदर्शीनी ने जनसीदन जी के साहित्य में समाज और संस्कृति पर आलेख पढ़ी। सत्र की अध्यक्षता करते हुए विद्वान डॉ. प्रो. केष्कर ठाकुर (भागल पुर) ने विद्वता पूर्ण आलेख की समीक्षा करते हुए जनसीदन जी को मैथिली साहित्य का सामाजिक उन्नायक तक कहा। इस प्रकार वेबनार को अकादमी के उप सचिव विद्वान श्री एन सुरेश बाबू ने दिन के एक बजे समापन की घोषणा की।